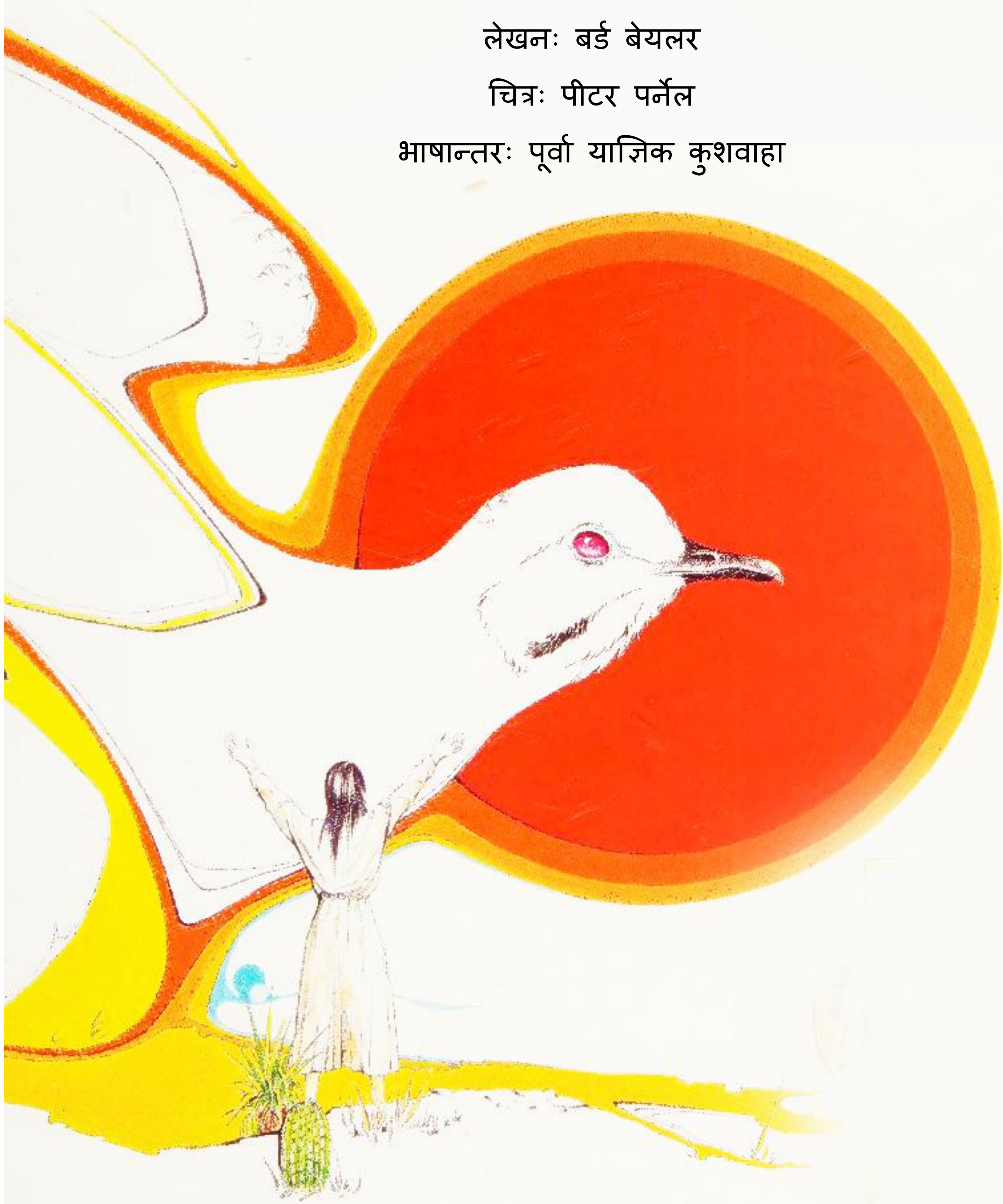
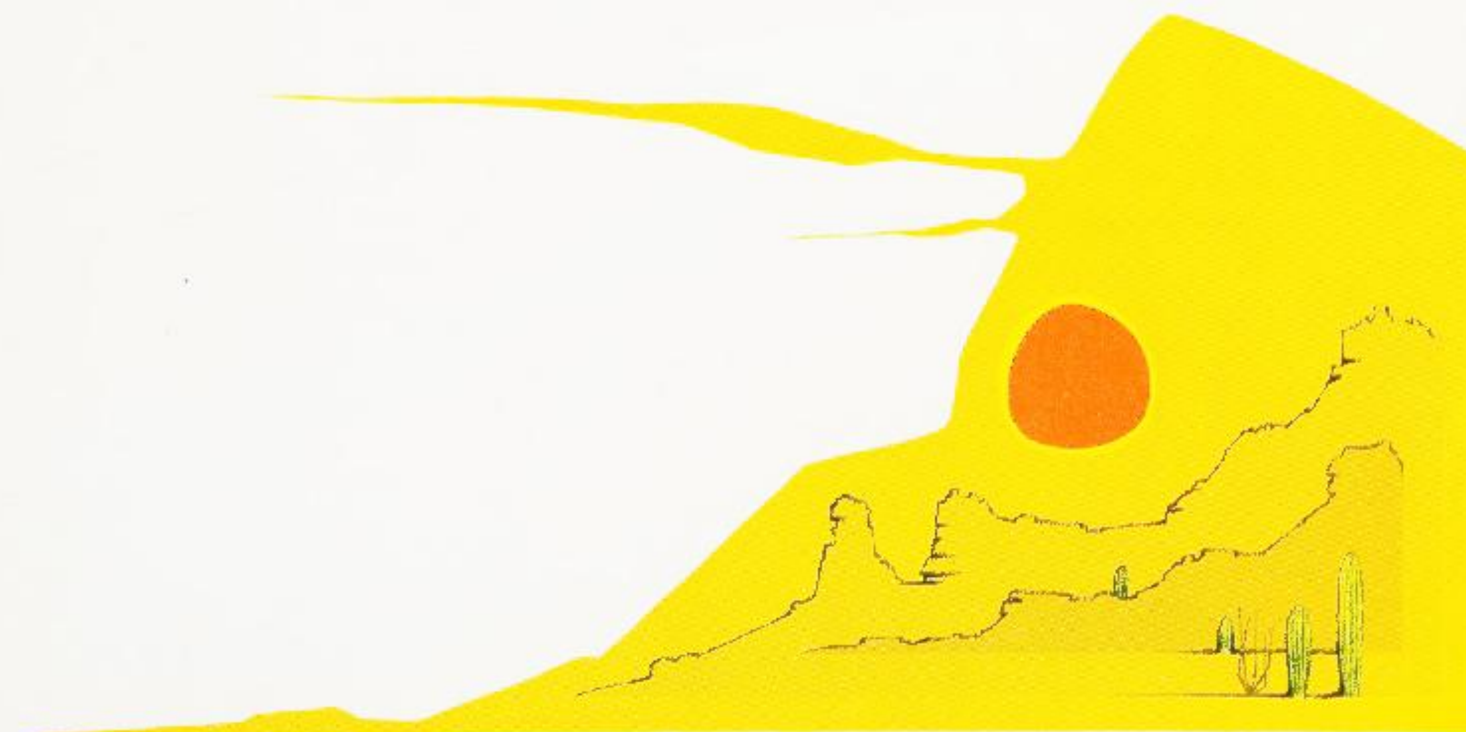
जश्नों की आयोजक हूँ मैं

लेखनः बर्ड बेयलर

चित्रः पीटर पर्नेल

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



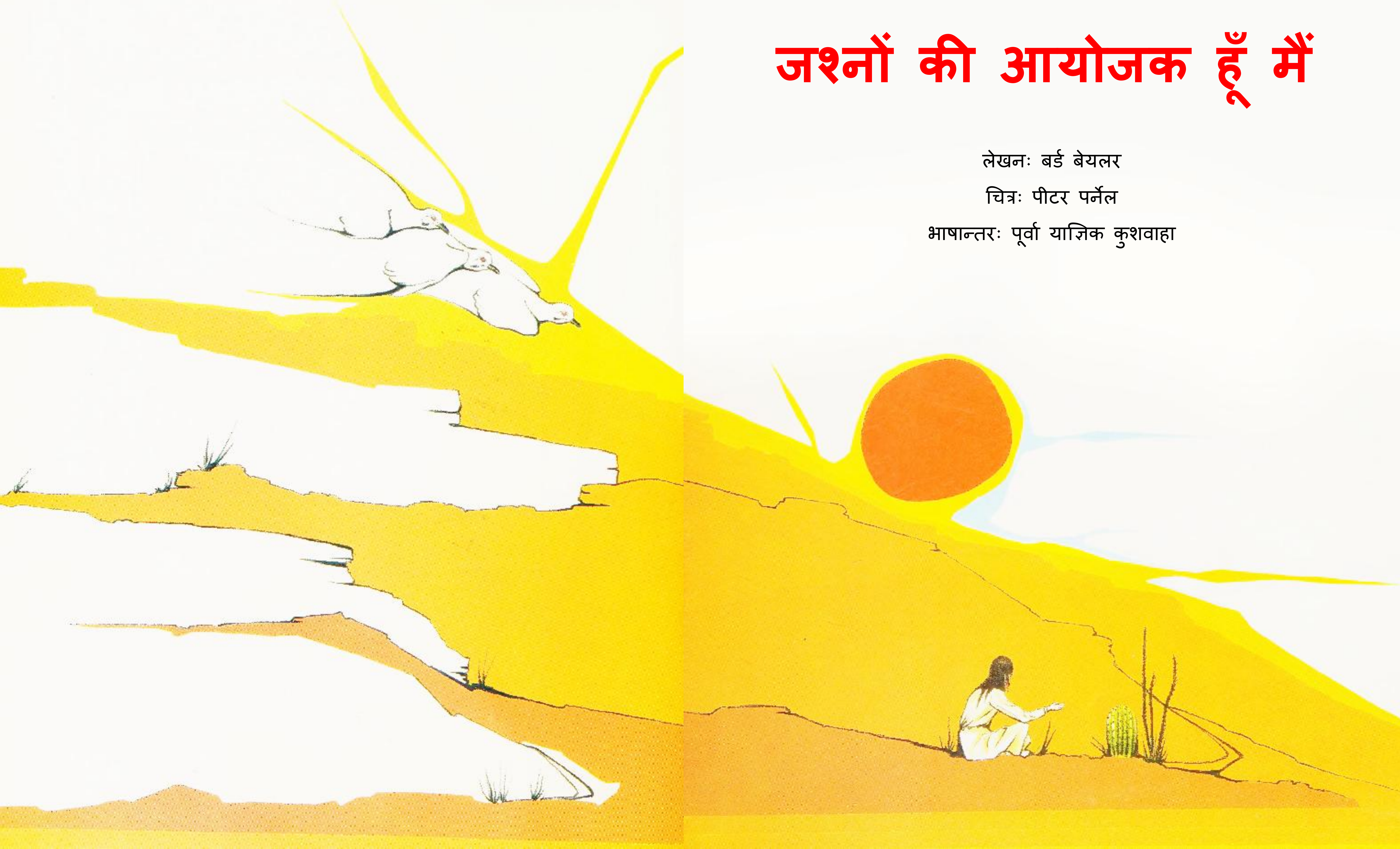


जश्नों की आयोजक हूँ मैं

लेखनः बर्ड बेयलर

चित्रः पीटर पर्नेल

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



लीआ व सारा का जश्न मनाते हुए





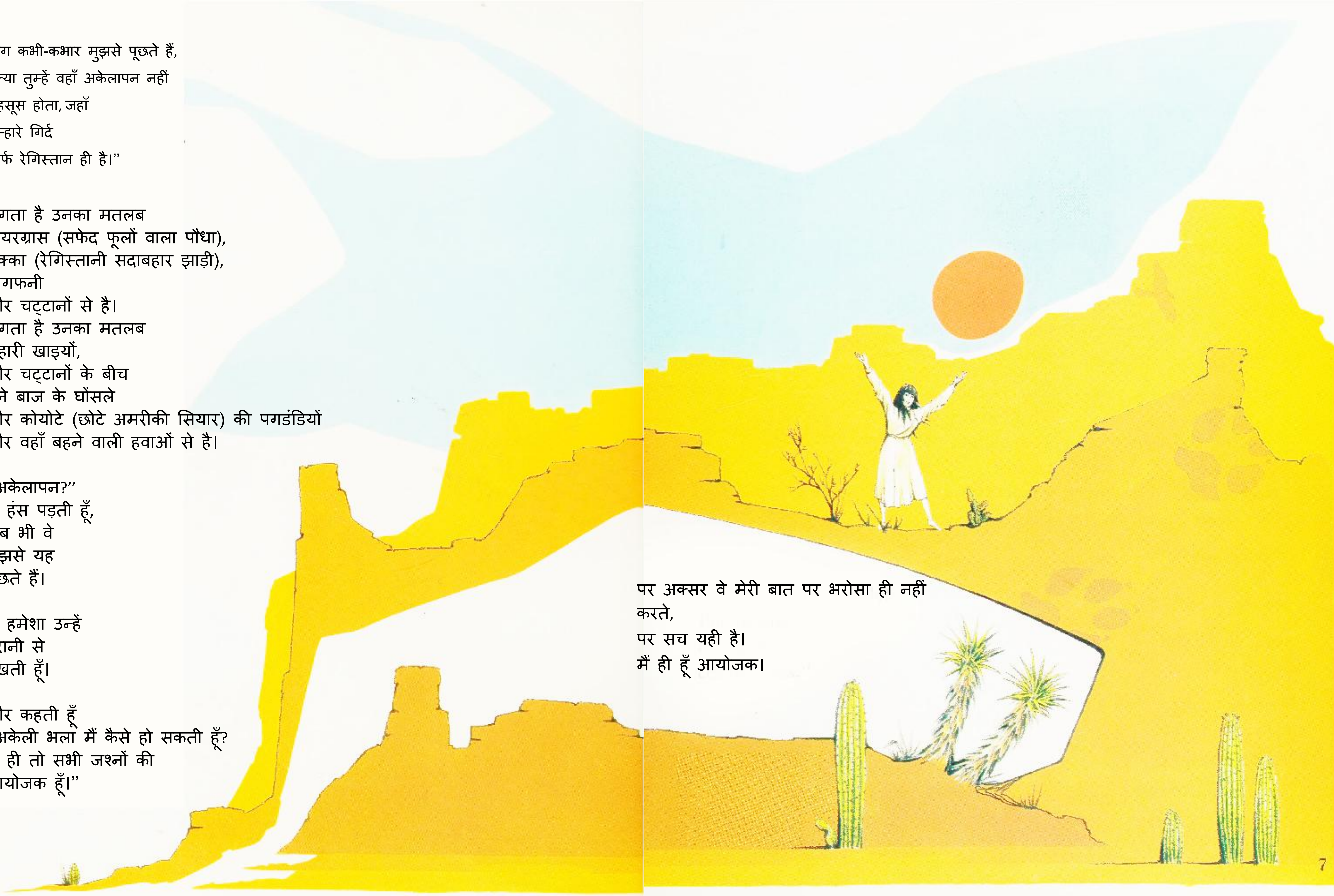
लोग कभी-कभार मुझसे पूछते हैं,
"क्या तुम्हें वहाँ अकेलापन नहीं
महसूस होता, जहाँ
तुम्हारे गिर्द
सिर्फ रेगिस्तान ही है।"

लगता है उनका मतलब
बीयरग्रास (सफेद फूलों वाला पौधा),
युक्का (रेगिस्तानी सदाबहार झाड़ी),
नागफनी
और चट्टानों से है।
लगता है उनका मतलब
गहारी खाइयों,
और चट्टानों के बीच
बने बाज के घोंसले
और कोयोटे (छोटे अमरीकी सियार) की पगडंडियों
और वहाँ बहने वाली हवाओं से है।

"अकेलापन?"
मैं हंस पड़ती हूँ,
जब भी वे
मुझसे यह
पूछते हैं।

मैं हमेशा उन्हें
हैरानी से
देखती हूँ।

और कहती हूँ
"अकेली भला मैं कैसे हो सकती हूँ?
मैं ही तो सभी जश्नों की
आयोजक हूँ।"



पर अक्सर वे मेरी बात पर भरोसा ही नहीं
करते,
पर सच यही है।
मैं ही हूँ आयोजक।

मैंने खुद
इन जश्नों की ज़िम्मेदारी ली है।
उन्हें चुनती भी मैं ही हूं।

पिछले साल
मैंने खुद को
एक सौ आठ
जश्न दिए -
ये उन जश्नों के
अलावा थे
जिनके लिए स्कूल बन्द रहते हैं।

थोड़े से जश्नों से
मेरा काम जो नहीं चलता।

मैं एक कॉपी रखती हूँ,
तब उसमें उस जश्न
की तारीख दर्ज करती हूँ,
उसके बारे में लिखती हूँ।

मैं सोच-समझ कर
वह चुनती हूँ
जिसका बखान उस कॉपी
में दर्ज होता है।
वह कुछ ऐसा होता है
जिसे मैं अपनी ज़िन्दगी
भर याद रखना चाहती हूँ।

कोई घटना जश्न
कहलाने लायक है या नहीं
इसका पता चल ही जाता है।
क्योंकि तब तुम्हारा दिल
तेज़ी से धड़कता है,
तुम्हें लगने लगता है
मानो तुम किसी
पहाड़ पर खड़े हो
और तुम . . .
कुछ इस तरह साँस लेने लगते हो
मानो तुम किसी नई तरह की हवा
में साँस ले रहे हो।



अगर ऐसा न हो,
तो मैं उसे एक औसत दिन ही मानती हूँ।
(मैं बता ही चुकी हूँ ना
कि मैं सोच-समझ कर
ही जश्न का दिन चुनती हूँ।)

दोस्त, काश तुम यहाँ
धूल पिशाच दिवस पर होते।
पर चूंकि तुम नहीं थे,
मैं बताती हूँ कि
वह किस तरह
मेरा पहला
सचमुच का
जश्न बना।

तुम चाहो तो उन्हें
बवंडर कह सकते हो।
पर मुझे लगता है
कि उन्हें धूल पिशाच
कहना सुनने में बेहतर लगता है।

खैर, मैं उन्हें देखने
हमेशा रुकती हूँ।
यहाँ हर कोई रुकता है।

पता है ना
वे कैसे आते हैं?
बहुत दूर-दराज के
मैदानी इलाकों से
घूमते और झूमते,
और गिरते, और मुड़ते
राह में टहनियाँ
और रेत
और पंख
और कांटेदार झाड़ियाँ
बटोरते, उठाते।

तो पिछले साल, ग्यारह मार्च
को हम सब कहीं जा रहे थे।
मैं एक पिकअप ट्रक में
पीछे बैठी थी
जब धूल पिशाच ने
आकार लेना शुरू किया।

तुम देख सकते थे कि वह
कितना भीमकाय है।

तुम कसम खा
यह भी कह सकते थे
कि वह अपने दोस्तों को
साथ चलने के लिए
बुला रहा था।

और दोस्त आए -
अपने ही
हवादार संगीत
की लय पर
नाचते-थिरकते।
हमने गिनना शुरू किया।
हम सभी ने दूसरे
अन्य बवंडरों को तलाशना शुरू किया।

उन्होंने हमारे पिकअप को रोक दिया
और हमने अपनी
नज़रें घुमाईं, चारों ओर
और उन सबको देखा।
वे पूरे सात थे।





ऐसे मौके पर
अपने अन्दर कुछ
पगला-सा जाता है।
तुम्हें उनसे मिलने
पूरे रास्ते चीखते-चिल्लाते
हुए दौड़ना पड़ता है।

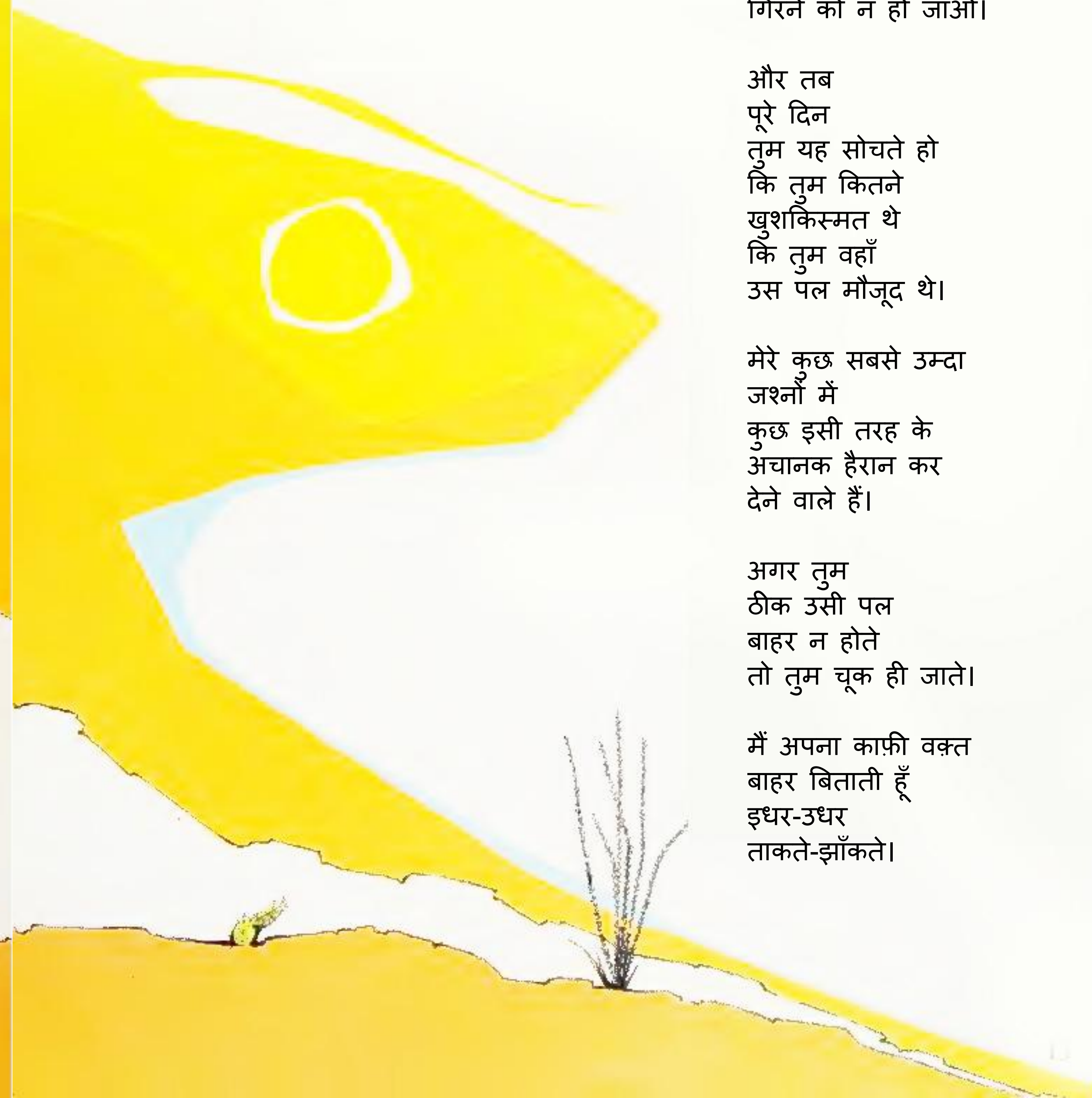
तुम्हें भी उसी तरह
चक्कर घूमने पड़ते हैं
मानो तुम भी
उन्हें में से एक हो।
और तुम तब तक
रुक नहीं सकते
जब तक तुम
गिरने को न हो जाओ।

और तब
पूरे दिन
तुम यह सोचते हो
कि तुम कितने
खुशकिस्मत थे
कि तुम वहाँ
उस पल मौजूद थे।

मेरे कुछ सबसे उम्दा
जश्नों में
कुछ इसी तरह के
अचानक हैरान कर
देने वाले हैं।

अगर तुम
ठीक उसी पल
बाहर न होते
तो तुम चूक ही जाते।

मैं अपना काफ़ी वक़्त
बाहर बिताती हूँ
इधर-उधर
ताकते-झाँकते।



एक बार मैंने
एक तिहरा इन्द्रधनुष देखा
जो उस खाई में खत्म होता था,
जहाँ मैं एक दिन
पहले ही गई थी।

मैं पहाड़ी को
आधा पार कर खड़ी थी
झिरमिर बरसात में।

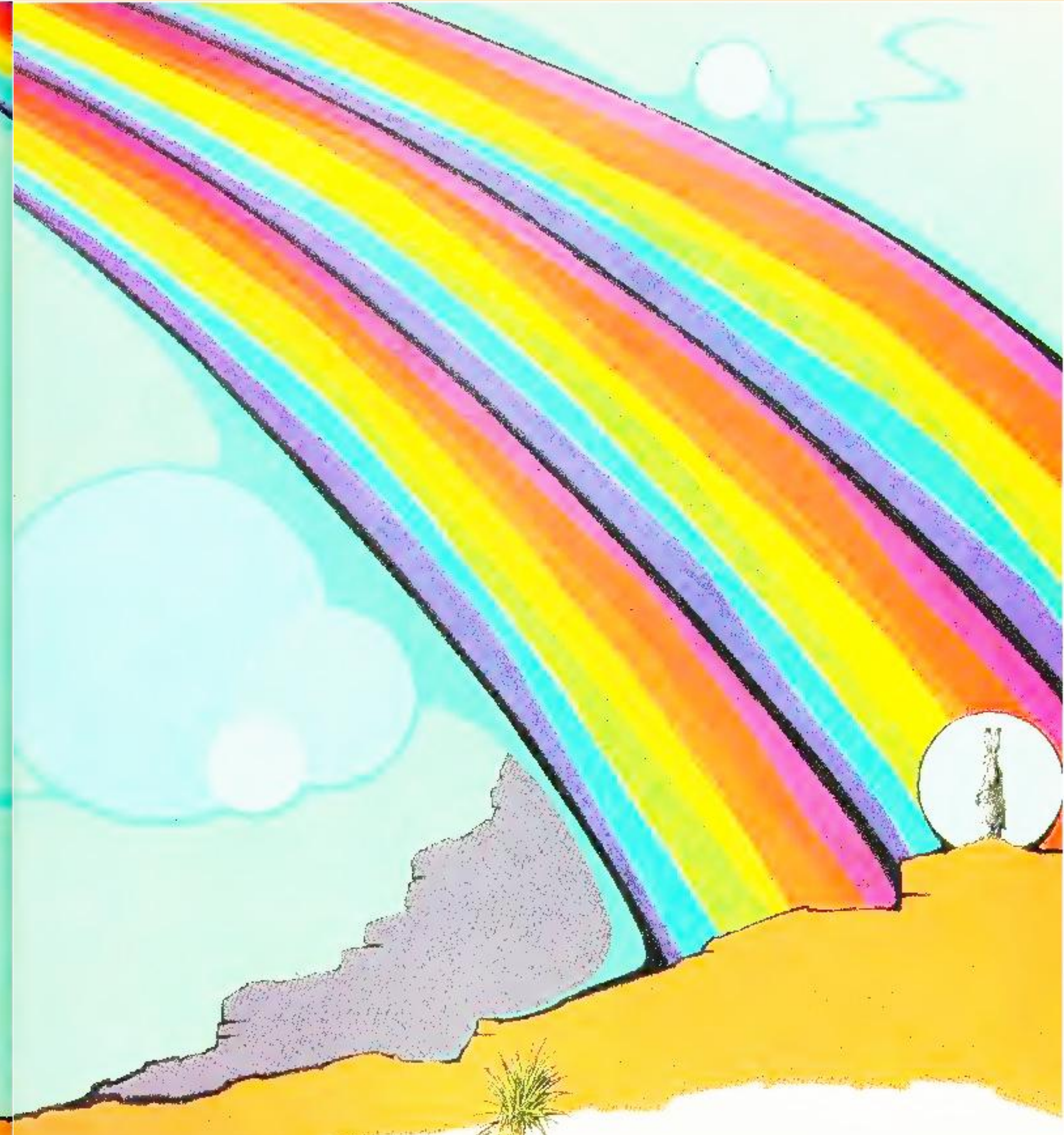
अंधेरा लगभग घिर आया था
पर मैं अन्दर नहीं गई
(ज़ाहिर है इन्द्रधनुष के कारण),
और वहाँ पहाड़ी के ठेठ ऊपर
एक बड़ा खरगोश
अपनी पिछली टांगों पर
खड़ा था।
एकदम स्थिर
सीधे उसी
तिहरे इन्द्रधनुष
को देखते।

मैं शायद दुनिया की
अकेली इन्सान हूँ
जिसने एक खरगोश को
कोहरे में चुपचाप खड़े
तीन इन्द्रधनुषों को देखते
देखा होगा।

यह घटना तो
कभी भी
जश्न मनाने लायक है।

मैंने उसे कॉपी में दर्ज कर लिया
और एक पहाड़ आँका
और खरगोश
और इन्द्रधनुष
और खुद को भी आँका।





और अब से
नौ अगस्त
इन्द्रधनुष जश्न का दिन है।



मेरा एक
हरे बादल का दिन
भी है।

किसीसे भी पूछ लो
और वे यही कहेंगे
कि बादल हरे
नहीं होते।

पर
सर्दियों की एक दोपहर
मैंने एक बड़े भारी
हरे बादल को
देखा।

वह नीलाभ-हरा
या धूसर हरा
या कुछ और नहीं था।
वह बादल
था हरा . . .

हरा, जैसा जंगली तोते का
हरा होता है।
और भी अजीब यह था
कि वह
तोते का आकार लेने लगा,
पहले पंख,
फिर सिर
और चोंच।

सर्दियों के आसमान में
ऊपर वह हरा पाखी
उड़ चला।

मिनट भर से
अधिक टिका नहीं।
मालूम है ना कि
बादल कितनी जल्दी
रूप बदलता है।
पर मुझे
फिर भी याद है
कि वह कैसा दिखा था।

सो अब मैं
छह फरवरी को
हरे बादलों का जश्न मनाती हूँ।

ऐसे समय
मैं हमेशा सोचती हूँ,
"अगर मैं चूक गई होती तो?
मैं घर के अन्दर होती तो?
या मैंने तब ऊपर ताका न होता
तो?"

देख ही रहे हो
ऐसी चीज़ों के बारे में
मैं कितनी खुशकिस्मत हूँ।

कोयोटे (अमरीकी सियार)
दिवस
पर भी किस्मत ने साथ दिया।
क्योंकि पूरे दिन में
ठीक वही एक पल था
जब उस कोयोटे
और मेरी
मुलाकात होनी थी,
और हुई भी।

दोस्त तुम्हें भी
वहाँ होना चाहिए था।

मैं हिरणों के पैरों के निशानों
का पीछा कर रही थी,
आराम से चलते-चलते
नीचे झुक
गुनगुनाते हुए
(जब मैं अकेली होती हूँ
तब काफ़ी गुनगुनाती हूँ।)

पर मैंने तब अचानक
ऊपर देखा
जब एक छोटी कोयेटे
एक झाड़ी के बीच से
लपकती जा रही थी।

वह मेरे सामने से
गुज़री।
वह दिन तेज़ हवाओं वाला था
और वह कोयोटे पूर्व की
ओर बढ़ रही थी।

उस सहज
मूक तरीके से
जैसे कोयोटे चलते हैं
वह हवाओं के बीच
खुद को धकेलते बढ़ी।

मैं ठिठक कर वहीं खड़ी रही,
मैंने साँस तक नहीं ली
यह सोचती रही कि काश
मैं भी उसी तरह चल पाती।

मुझे तब अचरज हुआ
जब मैंने उसे रुकते
और मुड़ कर मुझे देखते
देखा।

लगा कि वह सोच रही है
कि मैं भी उसी की तरह
कोई जीव हूँ
जो पथरीली
पगडंडी पर बढ़
रही है।

(बेशक, यह सच है भी
मैं भी हूँ ना एक जीव।)

उसने कोई जल्दबाज़ी नहीं की।
वह डरी भी नहीं।

मैंने उसकी आँखों में झाँक कर
देखा
और उसने मेरी में।
उस नज़र ने हमें
साथ बाँध दिया।





यही कारण है कि
अब मैं
कभी पहले-सा
महसूस नहीं करूंगी।

इसलिए
अट्ठाइस सितम्बर को
मैं कोयोटे दिवस मनाती हूँ।

उस दिन मैं
उसी पगडंडी पर
चलती हूँ, जिस पर
मैं तब चली थी,
और धीमे स्वर में
गुनगुनाती आगे बढ़ती हूँ।

और आख़िर में
मैं उसके लिए
लाए गए पकवान खोलती हूँ।

पिछली बार मैं जो लाई
उसमें तीन सेब थे
और कुछ कद्दू के बीज
और एक भुट्टा
और कुछ बड़े, मुलायम
घर के बने अदरक के बिस्कुट।

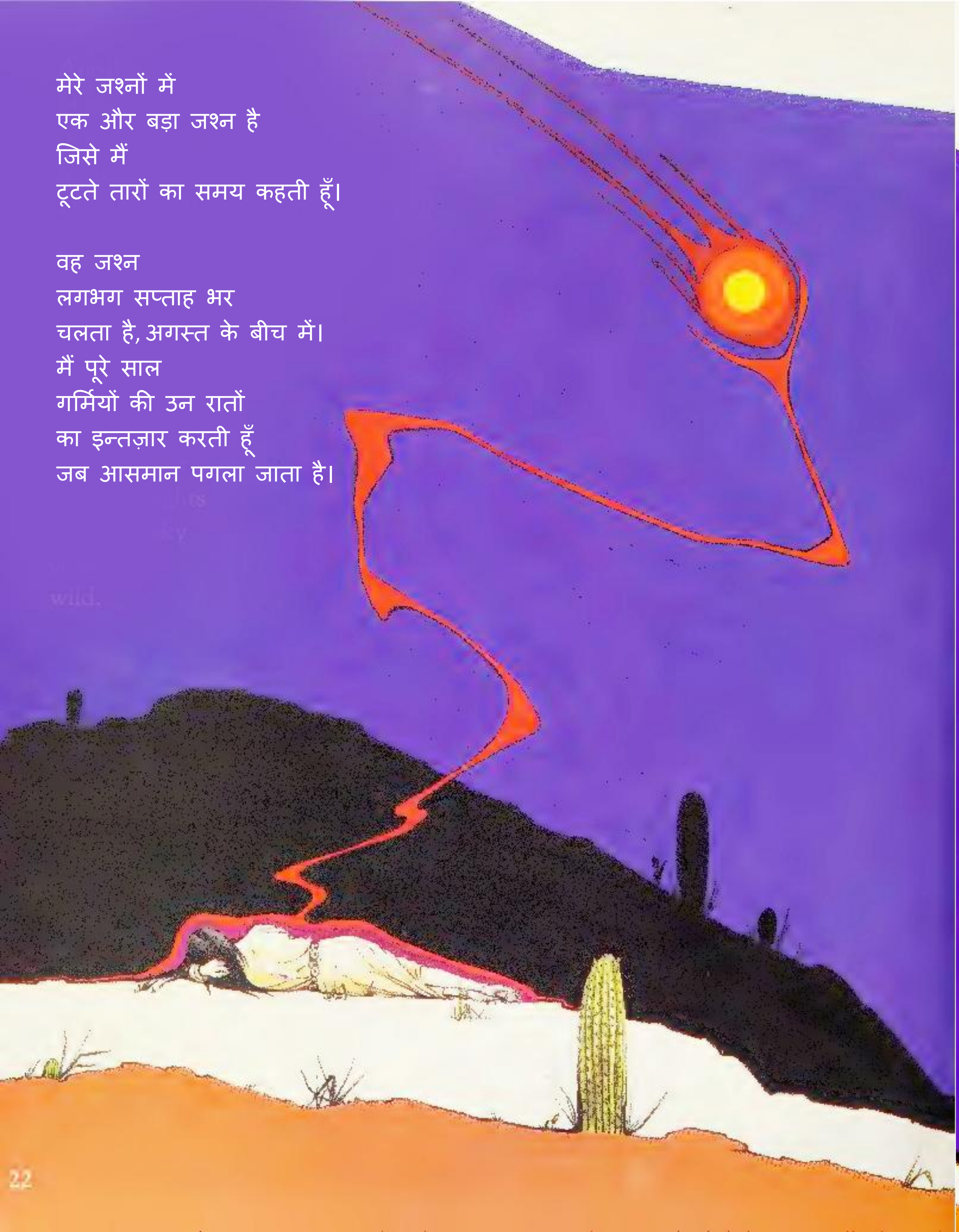
अगले दिन जब
मैं उसी पगडंडी के पास से गुज़री
मैंने कायोटे के पैरों के निशान
देखे जो उस चट्टान के गिर्द थे
जहाँ मैंने खाना रखा था,
और खाना गायब था।

अगले साल मैं यह जश्न
और भी बेहतर तरीके से मनाऊँगी।
मैं अपने लिए भी खाना लाऊँगी
और वहीं खाऊँगी।



मेरे जश्नों में
एक और बड़ा जश्न है
जिसे मैं
टूटते तारों का समय कहती हूँ।

वह जश्न
लगभग सप्ताह भर
चलता है, अगस्त के बीच में।
मैं पूरे साल
गर्मियों की उन रातों
का इन्तज़ार करती हूँ
जब आसमान पगला जाता है।



चाहो तो तुम उसे
उल्कापात कह सकते हो।

मैं तो उसे
टूटते तारे कहना
पसन्द करती हूँ।

मैं उस पूरे सप्ताह
बाहर सोती हूँ।

मैं अपना पूरा ध्यान
आसमान पर लगाती हूँ।

और हर बार
जब प्रकाश की रेखा
अँधेरे को बेधती
गुज़रजी है,
मेरा दिल मानो
मेरे शरीर से
बाहर उछल जाता है।

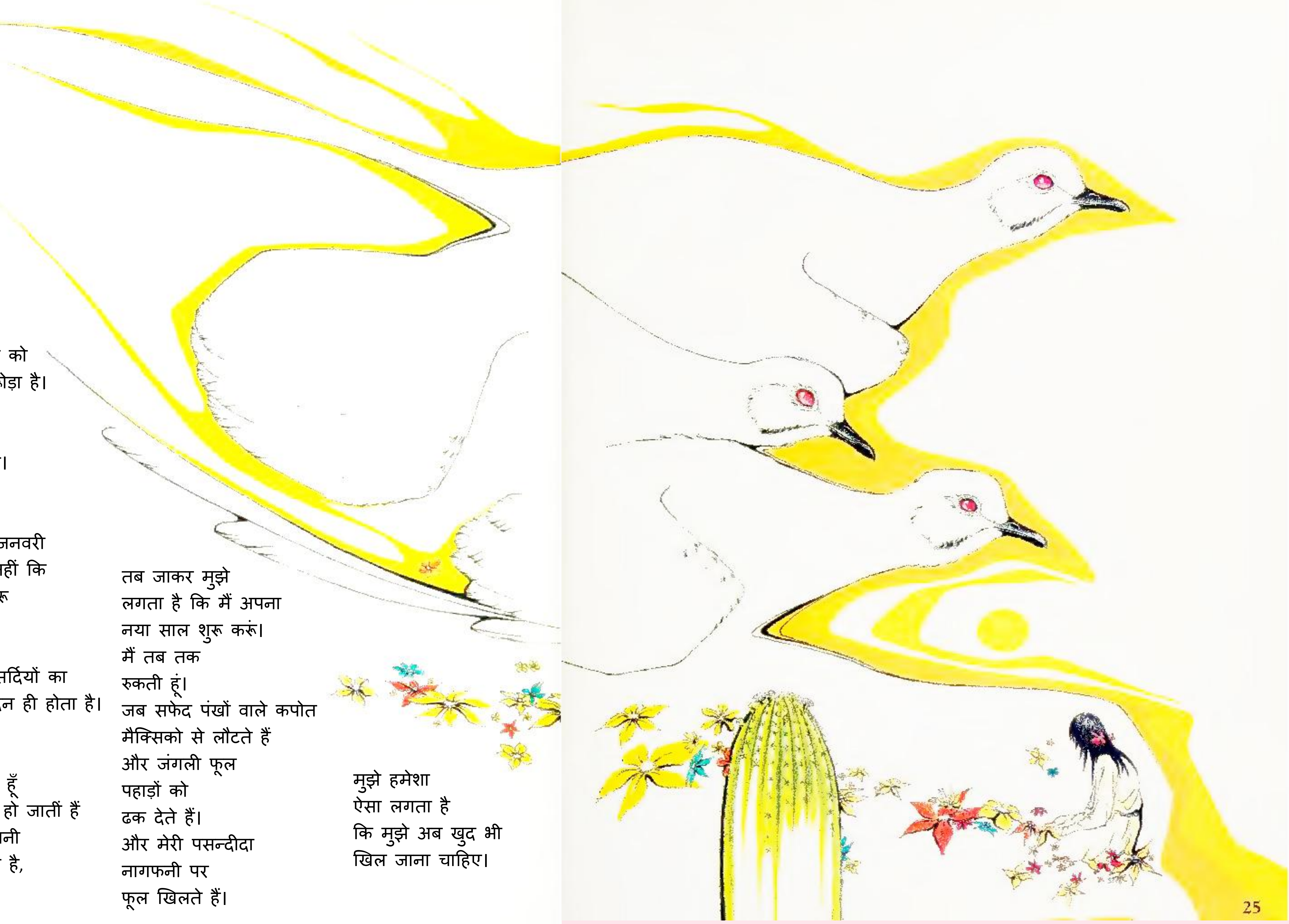
एक रात
मैंने एक
आग के गोले को देखा
जिसने अपने पीछे
आसमान के आर-पार
एक लम्बा,
धधकता
पथ बनाया।

जब वह गुज़र चुका
तब भी मैं वहीं
ऊपर देखती खड़ी रही।
मुझे भरोसा ही नहीं हो रहा था।

अजीब बात यह थी
कि मैं एक आदमी से मिली
जिसने बताया कि
उसने भी ठीक वही देखा था।
तब, जब वह
पाँच सौ मील दूर
खुले में अलाव जला
लेटा हुआ था।

उसने कहा कि
वह उस रात
फिर सो ही नहीं सका।

अचानक ऐसा लगा
कि हम दोनों
वह भाषा बोल रहे थे
जिसे कोई और
समझ ही नहीं सकता था।
अपने जीवन में
हर अगस्त में
मैं यही बात सोचूंगी।



दोस्त,
मैंने अपने
नए साल के जश्न को
आख़िर के लिए छोड़ा है।

मेरा नया साल
बसन्त में आता है।

सच बताऊँ
मुझे कभी पहली जनवरी
को यह लगा ही नहीं कि
मेरा नया साल शुरू
हो गया है।

मेरे लिए तो वह सर्दियों का
महज एक और दिन ही होता है।

मैं अपने साल को
तब शुरू होने देती हूँ
जब सर्दियाँ खत्म हो जातीं हैं
और सुबह की रोशनी
जल्दी आने लगती है,
जैसे आनी चाहिए।

तब जाकर मुझे
लगता है कि मैं अपना
नया साल शुरू करूं।
मैं तब तक
रुकती हूं।
जब सफेद पंखों वाले कपोत
मैक्सिको से लौटते हैं
और जंगली फूल
पहाड़ों को
ढक देते हैं।
और मेरी पसन्दीदा
नागफनी पर
फूल खिलते हैं।

मुझे हमेशा
ऐसा लगता है
कि मुझे अब खुद भी
खिल जाना चाहिए।



और तब जाकर
मैं अपने नए साल
के जश्न की योजना
बनाना शुरू करती हूँ।

अंत-तंत मैं
उस दिन को चुनती हूँ
जो बिलकुल
सही हो।

हवा तक को
एकदम सही
होना होता है।
और मेरे नंगे पैरों को
मिट्टी अच्छी और
गर्म लगनी होती है।

(अमूमन वह
अप्रेल के अंत
का एक
शनिवार होता है।)

मेरे पास
एक ड्रम है
जिसे मैं बजाकर
दिन की शुरुआत
का संकेत देती हूँ।

फिर मैं
घूमती-फिरती हूँ,
अपने पसंदीदा
रास्तों पर चलते हुए
उन सभी जगहों पर जो
मुझे पसंद हैं।

मैं देखती हूँ
कि सब कुछ कैसा चल
रहा है।

मैं चीज़ों को
निहारते हुए
अपना दिन बिताती हूँ।

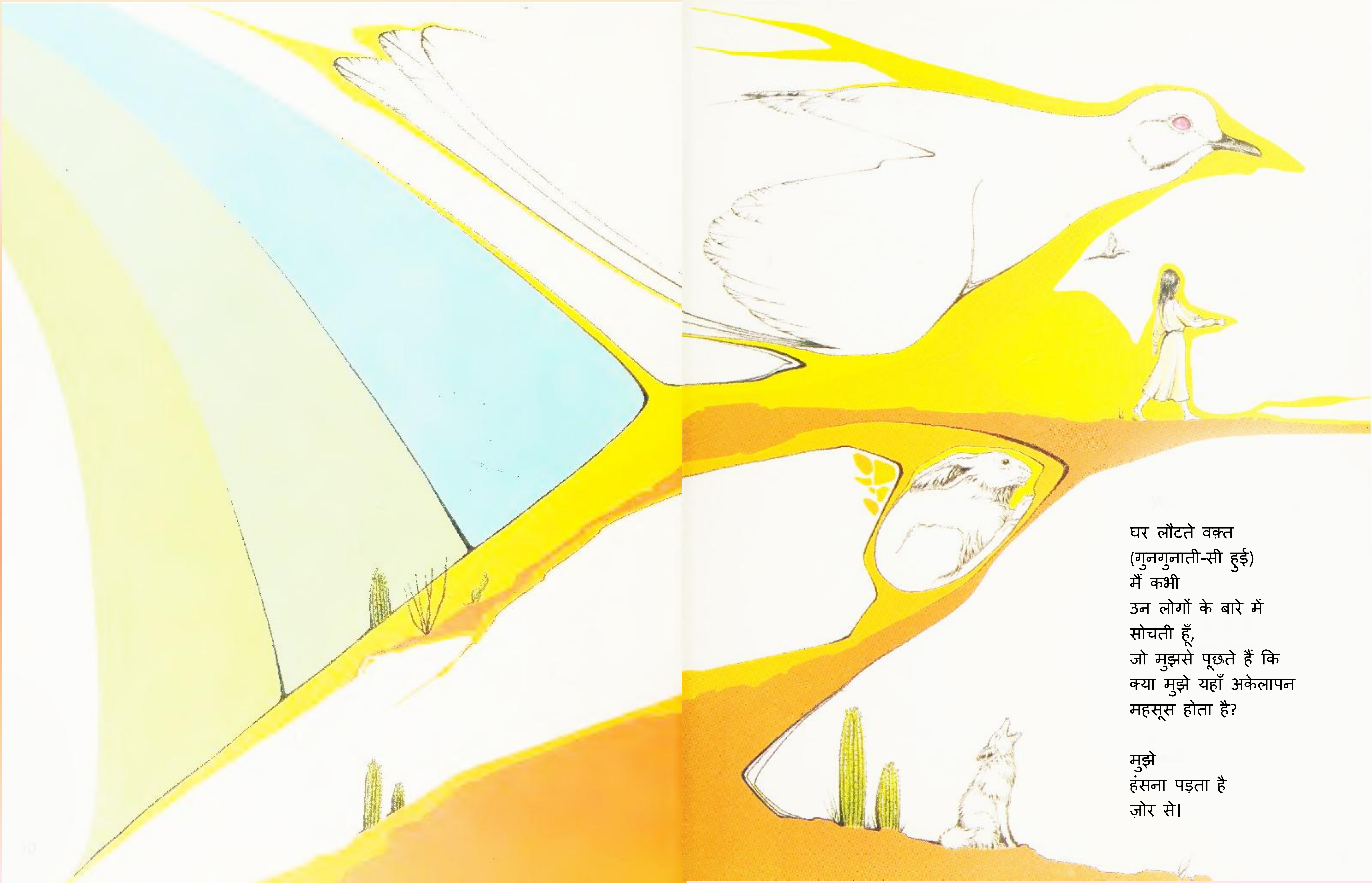


अगर वह बूढ़ा
रेगिस्तानी कछुआ
जिसे मैं पिछले साल से जानती हूँ
बाहर निकल
घूम रहा होता है
मैं कुछ देर
उसकी दिशा में चलती हूँ।

मैं सींगदार मेंढ़कों
और कौव्वों
और गिरगिटों
और बटेरों . . .
का जश्न मनाती हूँ।



और दोस्त,
यह जलसा
बुरा नहीं होता।



घर लौटते वक़्त
(गुनगुनाती-सी हुई)
मैं कभी
उन लोगों के बारे में
सोचती हूँ,
जो मुझसे पूछते हैं कि
क्या मुझे यहाँ अकेलापन
महसूस होता है?

मुझे
हंसना पड़ता है
ज़ोर से।

बर्ड बेयलर तथा पीटर पार्नेल ने तीन कैल्डेकॉट सम्मान से नवाज़ी गई पुस्तकों पर भी साथ-साथ काम किया हैः *द डेज़र्ट इज़ देयर्स; हॉक, आई एम यौर ब्रदर; तथा द वे टू स्टार्ट अ डे* ।

बर्ड बेयलर दक्षिण-पश्चिम में रहती हैं। उनकी काव्यात्मक गद्य शैली उस विशिष्ट दर्शन और सौन्दर्य को प्रतिबिम्बित करती है, जितना विशिष्ट व सुन्दर वह स्थान है जिसका वे वर्णन कर रही होती हैं। उनके लिए व्यक्तिगत विकास में आवश्यकता रूह की है, भौतिक वस्तुओं की नहीं। "एक बार यह फैसला कर लो, तो तुम्हारा जीवन मानो खुल जाता है और तुम जानने लगते हो कि अहमियत किसकी है, किसकी नहीं।"

पीटर पार्नेल मेन में स्थित एक फार्म में अपनी पत्नी व दो बच्चों के साथ रहते हैं। उनके चित्रों को अद्‌भुत, चमकीले और विस्मयकारी कहा गया है। जब वे जगत को चित्रित करते हैं, तो वे उसे इस तरह आँकते हैं, जिस तरह पशु उसे अनुभव करते हों।